RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 2, Year : 4
Jul.-Aug.-Sep. (2017), Pages : 114 - 117
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

मानव पारिस्थितिकी के ढांचे के भीतर स्थिरता

कु0 वर्षा
शोध छात्रा*

मीनाक्षी चौहान
शोध छात्रा*

*राजनीति विज्ञान विभाग, हे0न0ब0ग0 (केन्द्रीय) वि0वि0 श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Received : 04/05/2017 *1st BPR* : 10/05/2017 *2nd BPR* : 01/06/2017 *Accepted* : 16/06/2017

ABSTRACT

पारिस्थितिकी तंत्र की अवधारणा प्रकृति की जीवन्तता का मूल स्त्रोत है एवं यह मानव जीवन में अपना विशेष स्थान रखता है। इस दृष्टि से हम सम्पूर्ण पृथ्वी को एक विशाल पारिस्थिति तंत्र मान सकते हैं तथा वर्तमान में मानव जीवन की अनेक समस्याएं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पारिस्थितिकी से सम्बधित है जिन्हें पारिस्थितिकी ज्ञान द्वारा हल किया जा सकता है यही कारण है कि आधुनिक समय में विश्व की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा अन्य नीतियों में भी पारिस्थितिकी का योगदान बढ़ रहा है। वस्तुतः पारिस्थितिकी मानव कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पर्यावरणीय प्रदूषण की अन्तर्राष्ट्रीय समस्या के समाधान में भी पारिस्थितिकी का सहयोग अपेक्षित है। बढ़ती आबादी और इसके साथ तकनीकी और वैज्ञानिक विकास को आधार बनाकर जीवन का उच्च स्तर प्राप्त करने की चाह ने विश्व स्तर पर, पर्यावरण को प्रभावित किया है। पिछले कुछ दशको में तेजी से बढते औद्योगीकरण प्राकृतिक संसाधनो के अंधाधुंध दोहन और पर्यावरण के लिए खतरा पैदा करने वाले धातक पदार्थो के निरंतर बढते उपयोग ने पर्यावरण और इसमें व्याप्त जीवन के समस्त रूपों के अस्तित्व को चुनौती दी है। मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे जल, वायु, मृदा आदि की गुणवत्ता में ह्रास ने यह सोचने के लिए हमें बाध्य कर दिया है कि पर्यावरण असन्तुलन पारिस्थितिकी को बिगाड़ रहा है। यदि यह क्रम इसी तरह से चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं कि एक दिन सम्पूर्ण जैव जगत का जीवन संकटमय हो जायेगा। अतः ऐसी विकराल समस्या को समझना तथा उसके समाधान के उपाय खोजना आज की महती आवश्यकता हो जाती है। प्रस्तुत शोध पत्र में मानव पारिस्थितिकी तंत्र की संकल्पना तथा मानव क्रिया–कलापों का पारिस्थितिकी एंव पर्यावरण पर अधिप्रभाव का उल्लेख किया है।

की–वर्ड : पारिस्थितिकी, सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरण, संसाधन।

पारिस्थितिकी तंत्र की संकल्पना

पारिस्थितिकी तंत्र की संकल्पना भौगोलिक जैव भार पर आधारित है, इस संकल्पना के अनुसार किसी भौगोलिक इकाई या क्षेत्रीय इकाई (छोटी या बडी) मे समानुसार समस्त जीवो और उनके भौतिक पर्यावरण के मध्य तथा आपस मे अन्तप्रकिया होती रहती है, तथा वे सूत्रबद्ध होकर इसे संतुलित बनाए रखने के लिए अपनी सीमा में निरन्तर कियाशील रहते है। इस प्रकिया मे जैव–अजैव तत्व वनस्पति, जीव–जन्तु और भौतिक पर्यावरण क्षेत्रीय इकाई जो जटिल प्रयोगशाला के रूप मे प्रयोग करते हुए सौर ऊर्जा खनिज एवं जल की मदद् से जैव तत्व का उत्पादन और अजैव तत्व मे इनका रूपांतरण करते रहते है। यह कार्य चक्रीय ढंग से सम्पादित होता है, जिससे तंत्र में उत्पादन और उपयोग के बीच संतुलन बना रहता है। इससे स्पष्ट है कि तंत्र का स्वरूप अर्थात् उसकी रचना कार्यशैली (Function) एवं कार्य विधि या उसकी गत्यात्मकता (Dynamic) पक्ष है। जिनका समग्र रूप एक अति जटिल स्वचालित एवं स्वनियन्त्रित भौतिक यन्त्र के समान कार्यशील दिखाई देता है।

इस प्रकार जैविक और अजैविक संघटको के मध्य पदार्थ और ऊर्जा का आदान–प्रदान यंत्रवत चलता रहता है, जिसे तन्त्र (System) कहा जाता है। उदाहरण के लिए तंत्र में जीवों के मध्य पोशण व्यवस्था (Food links) एक निश्चित ढंग से काम करती है। जो तन्त्र की सार्थकता को प्रमाणित करती है। इस प्रकार पारिस्थितिक तंत्र की अवधारणा प्रकृति की जीवन्तता का मूल स्त्रोत है।

मानव पारिस्थितिकी की अवधारणा

जब मनुष्य का सामाजिक प्राणी के रूप में प्रकृति के जैव–अजैव घटकों के साथ परस्पर अन्तप्रक्रिया के सन्दर्भ में अध्ययन किया जाता है, तो उसे मानव पारिस्थितिकी कहा जाता है, अर्थात् मानव समुदाय और प्रकृति के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या मानव

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 114-117 , ISSN 2348 – 3318

कु0 वर्षा एवं मीनाक्षी चौहान

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

पारिस्थितिकी है। वस्तुत पृथ्वी के जैव–अजैव घटकों के सन्दर्भ में मानव के स्थान का निर्धारण मानव पारिस्थितिकी का मूल उददे्श्य है।

पृथ्वी की जैविक–अजैविक व्यवस्था में मनुष्य की स्थिति अन्य जीवधारियों से भिन्न है, हालांकि यह भी जीवन–चक्र के सन्दर्भ में समान है। जैवमण्डल की जीवधारियों को अपने पारिस्थितिक तन्त्र में दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है, पहली अपने वैयक्तिक जैविक गुणों के अनुसार पर्यावरणीय अर्न्तप्रकिया द्वारा जीवन संचार जिसे हम स्व–पारिस्थितिकी के नाम से जानते है, और दूसरी तथा अन्य जीवों से परस्पर अर्न्तप्रक्रिया जिसे हम समुदाय, पारिस्थितिकी के नाम से पुकारते है। इन दोनों पारिस्थितियों में जीव अपना अस्तित्व बनाये रखने का प्रयास करते है। जैव–अजैव घटकों की संतुलित अर्न्तप्रकिया से पारिस्थितिक तंत्र संतुलित बना रहता है। क्योंकि प्रकृति जीवों की जननी है, अतः वह यथा सम्भव विधि से पारिस्थितिक तंत्र गुणवक्ता जैविक विकास के लिये बनाये रखने का प्रयास करती है, यही अवधारणा प्रकृतिवाद का आधार है।

स्पष्ट है कि मनुष्य एवं पर्यावरण की जटिल अर्न्तप्रकिया की व्याख्या तथा परस्पर प्रभावों का मूल्यांकन मानव पारिस्थितिकी का मूल उद्देश्य है, जैसा कि रूसी विद्वान लिसिटसिन का भी यही मानना है, इनके अनुसार मानव पारिस्थितिक का परम उद्देश्य मानव पर्यावरण की अर्न्तप्रकिया में शोध द्वारा मानव के जीवन और उसके भौतिक एवं आध्यात्मिक योग्यता के विकास हेतु आवश्यक दशाओं की खोज करना है।

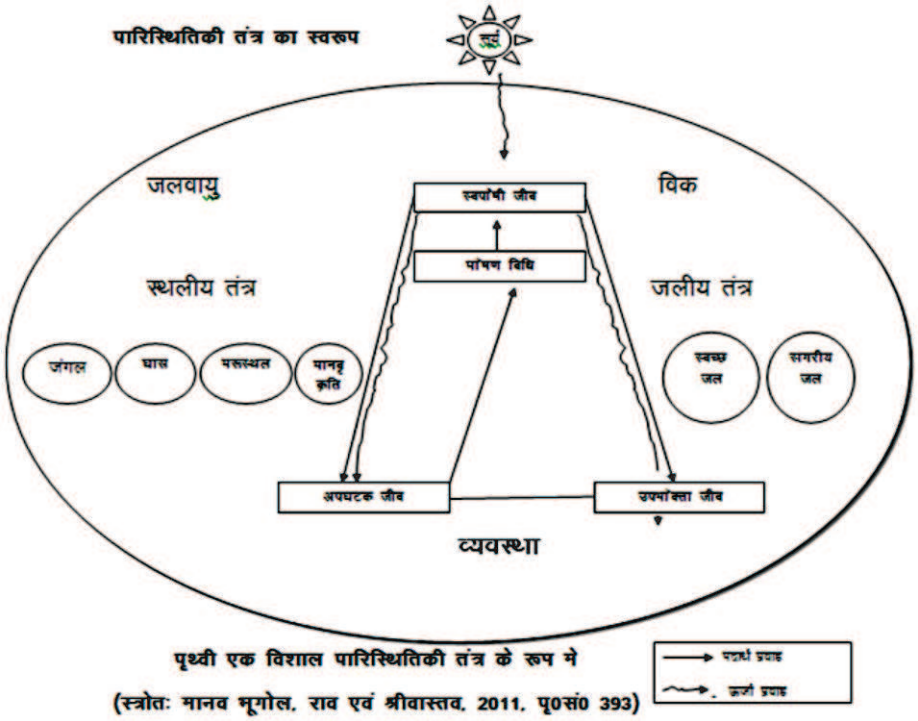

संक्षेप में कहां जा सकता है, कि पारिस्थितिक तंत्र की सत्ता उसकी गुणवत्ता में निहित होती है और गुणवत्ता के लिये प्राकृतिक व्यवस्था के अन्तर्गत संरचनात्मक कियाशीलता आवश्यक है। अतः पारिस्थितिक तंत्र का स्वाभाविक या प्राकृतिक रूप दीर्घकालिक, स्थिर और बहुआयामी होता है। पारिस्थितिक तंत्र की अस्थिरता पर्यावरणीय अवनयन से सम्बन्धित है, जिसके लिये प्रकृति और मनुश्य दोनों जिम्मेदार हैं।

उद्देश्य–

- पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनो का दुरूपयोग होने से बचाना।
- वर्तमान और भविश्य की पीढियों के लिये प्राकृतिक संसाधनो को सुरक्षित रखना है।
- पृथ्वी पर पाये जाने वाले प्राकृतिक संसाधनो वर्तमान एंव भविश्य के लिए सुरक्षित रखना है।
- जैव विविधता की रक्षा करना तथा विकास की नीतियों में स्थानीय समुदायों को शामिल करना।
- इस प्रकार की नई वैज्ञानिक तकनीको की खोज हो जो प्रकृति के नियमो के अनुरूप कार्य करे।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 114-117 , ISSN 2348 – 3318
कु0 वर्षा एवं मीनाक्षी चौहान
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

4– मानव क्रिया कलापों का पारिस्थितिकी एवं पर्यावरणीय स्तर पर अधिप्रभाव

भूतल पर अन्य जीवधारियो की अपेक्षा मानव पर्यावरण का सबसे अधिक गतिशील कारक है, मानव को अपनी दैनिक क्रियाओं तथा विकास की प्रक्रियाओं द्वारा पर्यावरण में निरंतर परिवर्तन हो रहा है। पर्यावरण में परिवर्तन अथवा नियंत्रण मानव की आवश्यकता, क्षमता तथा समायोजन पर निर्भर करता है। प्रकृति पर मनुष्य का प्रभाव अब केवल स्थानीय स्तर व लघु स्तर तक ही नहीं पड़ रहा है, अपितु यह सम्पूर्ण जैव मण्डल की संरचना संसाधनों तथा भू–पारिस्थितिकी पर भी प्रभाव डाल रही है। बढ़ती हुई आबादी से झोपड़पट्टियों का विकास तथा औद्योगीकरण व तकनीकी प्रगति से औद्योगिक प्रदूषण स्पष्ट परिणाम है, मनुष्य द्वारा वनों के असीमित व अवैज्ञानिक दोहन से तथा खनन से भू–पारिस्थितिकी व्यवस्था का विध्वंसन भी हो रहा है।

प्रकृति में विशेष रूप से जैव जगत में मनुष्य के आर्थिक क्रियाकलाप के फलस्वरूप अनवरत परिवर्तन होते रहते है, इन परिवर्तनो में मुख्यता वनाच्छदित क्षेत्रों का कम होना भूमि तथा जल का अम्लीकरण होना, औद्योगिक अवशेष जिनमे कुछ अत्यंत जहरीले पदार्थ भी मिले होते है; का बढ़ना, वायु, समुद्र तथा भूमि में प्रदूषण, परम्परागत ईधन का बड़ी मात्रा में जलाया जाना जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी के तापमान में निरंतर वृद्धि और बदलाव आने की सम्भावना पैदा करने वाले कार्बन डाइ आक्साइड के सांद्रण मे वृद्धि होना मुख्य समस्यायें है।

वर्तमान समय मे बढ़ती हुई जनसंख्या औद्योगीकरण व शहरीकरण के परिणाम स्वरूप उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण व पर्यावरण असन्तुलन आदि समस्याओं की भयावहता के कारण आज पारिस्थितिकी विज्ञान सर्वाधिक महत्वपूर्ण विज्ञान बन चुका है। अब मानव यह स्वीकार कर चुका है। कि पारिस्थितिकी के सिद्धांतों को समझ कर तथा प्रकृति के अनुरूप कार्य करने से ही प्रकृति के साथ सामंजस्य की स्थिति उत्पन्न की जा सकती है। अन्यथा मानव जाति का अस्तित्व खतरे मे पड़ सकता है।

5– मानव पारिस्थितिकी का बदलता स्वरूप और मानव का भविष्य

एक सामान्य उक्ति है, कि जहाँ चाह होती है। वहॉ राह भी होती है। यदि मानव समाज के भविष्य का चित्र बनाया जाए तो दो सम्भावनाएँ प्रकट होती है। एक उज्जवल भविष्य की तथा दूसरी सकंटमय भविष्य की, इन दोनों में से निःसन्देह हम उज्जवल भविष्य का मार्ग पकड़ना चाहेगे। लेकिन इसके साथ–साथ यह भी प्रश्न उठता है कि क्या हम अपनी प्रगति के नाम पर अपनाये गए मार्ग मे कोई संशोधन कर सकेंगे वास्तविकता यह है, कि बीसवी सदी की हमारी आर्थिक छलांग ने हमे दिग्भ्रमित कर दिया है। हम प्रकृति को माँ का आसन न देकर उसके साथ दासी का व्यवहार करने लगे है। प्रकृति के रहस्यों के उद्घाटन और उसके साधनों के उपयोग के समय हम आवश्यक सावधानी बरतने की आदत छोड़ चुके है।

मानव समाज दो पारिस्थितिकीय व्यवस्थाओं का निर्वाह करता है, प्राकृतिक पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक पारिस्थितिकी। सांस्कृतिक पारिस्थितिकी के प्रति मानव का बढ़ता मोह और भौतिक पारिस्थितिकी की उपेक्षा ने खतरनाक मोड़ ले लिया है, अपनी अनुक्रियाओं का विस्तार जिस रूप मे मानव समाज कर रहा है। उससे प्रकृति के विधान पंगु हो रहे है, जिससे भविष्य की सम्भावनाएँ संकट पूर्ण होती नजर आ रही है। अतः यह आवश्यक है, कि भविष्य की सम्भावनाओं का मूल्यांकन मानवीय अनुक्रियाओं के परिप्रेक्ष्य में किया जाए ताकि मानव पारिस्थितिकी में आये बदलाव से उत्पन्न संकटों के कारण और निवारण पर विचार किया जा सके।

अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए मनुष्य को अनेक क्रिया–कलाप करना पड़ता है, जिसे मानवीय अनुक्रिया कहा जाता है। इन मानवीय अनुक्रियाओ को पाँच समूहो मे बांटा जाता है।

1– आधारभूत आवश्यकताएं भोजन, वस्त्र, मकान, उपकरण और परिवहन।
2– प्रमुख क्रिया–कलाप आखेट, पशुपालन, कृशि उत्खनन ,उद्योग,यातायात और परिवहन।
3– सामाजिक आवश्यकताएं समाज धर्म, विज्ञान, सरकार और अन्तर्राश्ट्रीय सम्बंध।
4– उच्च आवश्यकताएं– कला, विज्ञान, शिक्षा, मनोरंजन और स्वास्थ्य।
5– सौरमण्डलीय क्रिया–कलाप संचार उपग्रह, खोजी उपग्रह और शटल स्टेशन आदि।

उपरोक्त मानवीय अनुक्रियाओ के असंतुलित प्रभाव से मानव पारिस्थितिकी का संकट उत्पन्न होता है। मानव समाज जब अपने क्रिया–कलापों को निरकुशता से सम्पादित करता है। तो प्रकृति के विधान खण्डित होते है, और यही संकट का कारण बन जाते है। विकसित समाज सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रश्न चिह्न उत्पन्न कर रहा है।

सुझाव

- पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनो का इस प्रकार प्रयोग किया जाए कि पारिस्थितिकी तंत्र मे रहने वाले जीव जन्तु एंव वनस्पतियॉ इससे प्रभावित न हो।
- संसाधनो का सीमित मात्रा में प्रयोग किया जाए ताकि वह भावी पीढी के लिए सुरक्षित रह सके।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 2, Year : 4, Jul.-Aug-Sep. (2017), Pages : 114-117 , ISSN 2348 – 3318

कु0 वर्षा एवं मीनाक्षी चौहान

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

- मनुश्य को प्राकृतिक संसाधनो की रक्षा करनी चाहिए एंव उसे अपना मौलिक कर्तव्य समझना चाहिये
- प्राकृतिक संसाधनो का प्रयोग इस प्रकार से किया जाना चाहिए जिससे पर्यावरण असंतुलन न हो।
- विकास की अन्धी दौड को छोडकर भविश्य की पीढियों के लिए संसाधन सुरक्षित रखना, जिससे टिकाउ विकास की स्थिति बने रहे।

निष्कर्ष

सतत् विकास आर्थिक विकास को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोडता है इसका उद्देश्य वर्तमान और भविष्य की पीढियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखना है।

आज अर्न्तराष्ट्रीय समुदाय अपनी कार्यसूची में पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देता है। पर्यावरण संरक्षण मे गैर सरकारी संगठन भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है अतः सतत् विकास की सबसे बडी चुनौती आर्थिक विकास तथा पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाना है क्योकि इसी संतुलन पर मानव का अस्तित्व टिका हुआ है।

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि जैविकीय विज्ञानो मे विकसित पारिस्थितिकी दृष्टिकोण की तरह अन्य सभी विज्ञानो मे तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे भी व्यापक दृश्टिकोण बनता जा रहा है, तथा पारिस्थितिकी चेतना जागृत हो रही है। इसके साथ ही कुछ वैज्ञानिकों के इस प्रसास को कि पारिस्थितिकी अनुसंधान एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप मे होना चाहिए अपितु पारिस्थितिकी अनुसंधान एवं पारिस्थितिकी विकास एक समग्र विज्ञान के रूप में होना चाहिए जिससे प्रत्येक विज्ञान व प्रत्येक क्षेत्र की पर्यावरणीय समस्याओ को एक साथ संग्रहित और विश्लेषित करके सुनिश्चित दिशा मे कारगर उपाय किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- गौतम, अ0 (2010), संसाधन एंव पर्यावरण, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, पृ0सं0 262-263
- चौरसिया, रा0 आ0 (2007), पर्यावरण भूगोल, तृतीय परिवर्तित एंव परिवर्धित संस्करण, इलाहाबादः किताब महल एजेन्सीज पृ0सं0 99
- नेगी, पी0 एस0 (1994-95), पारिस्थितिकी विकास एवं पर्यावरण भूगोल, द्वितीय संशोधित संस्करण, मेरठः रस्तोगी एवं कंपनी, पृ0सं0 15-44
- राव, बी0 पी0 एवं श्रीवास्तव, वी0 के0 (2011), मानव भूगोल, गोरखपुरः वसुन्धरा प्रकाशन, पृ0सं0 358-393
- सिंह, एन0 पी0 (2004), पर्यावरणीय अध्ययन, मेरठः कृश्णा पब्लिकेशन्स पृ0सं0 54